अपनी उसने शक्ति दिखाई । मच्छ कच्छ का रूप बनाई
नृसिंह वाराह रूप धर आनों । जाहि देख असुरन भय मानों
वामन परशुराम अवतारा । जिनकी लीला जग विस्तारा
श्रीपति रामचंद्र जगपावन । भक्ति हेतु मारो जिन रावन
पुनि श्रीकृष्ण भये अवतारा । जिनके गुण गावत संसारा
मोहन रूप अनूप बनायो । श्याम वर्ण सबके मन भायो
बौधरूप बुधि माँहि न आवे । सो जानें जो दर्शन पावे
निष्कलंक है रूप अपारा । कुल कलंक को मेटन हारा
और अनेक रूप कह गावा । भेद अनन्त अन्त नहिं पावा
खोजत थकित रहे सब देवा । फिर नर क्योंकर पावे भेवा

दोहा—निरगुण ते सगुण भयो, लीला रची अनूप ।
आदि शक्ति लक्ष्मी भई, जाको अधिक स्वरूप ॥

चौपाई ।

चौदह भुवन रचे छिन माहीं । जिनकी थाह पाउ कोउ नाहीं
मृत्यु लोक पाताल अकाशा । चंद्र सूर्य जिमि किये प्रकाशा
अद्भुत माया रची बनाई । देव दनुज कीन्हें अधिकाई
लख चौरासी योनि बनाई । पृथक २ सब देहिं लखाई
सबकी मूरत न्यारी न्यारी । एक कुरूप एक अति प्यारी
जीवात्मा जब आकर बोला । हो गया चेतन सबका चोला
जीवातम कहलावे जोई । परमातम कर मानों सोई
वह है सबके घट घट माहीं । काहू को वह परगट नाहीं

हृदय माँहि तो परख ज़रा क्या-रंग रंगीली सूरत है।
धन जगदीश्वर धन्य सगुण अरु धन्य निर्गुण तव मूरत है ॥

दोहा—सगुण रूप प्रघट भयो, निर्गुण ब्रह्म अजेश।
माया रूपी जगत में, पूर रहा भुवनेश ॥

चौपाई।

ब्रह्म जीव में इतना अंतर। जीव कर्म वश ब्रह्म स्वतंतर
शुभ और अशुभ कर्म जगमाहीं। कर्म विना दुख सुख है नाहीं
जैसा कर्म करै जो कोई। वैसा फल पावै है सोई
आन वना जब यह संयोगा। कर्म प्रधान भये सब भोगा
कोई स्वर्ग में जा सुख पावे। कोई नर्क दुख पा पछितावे
कोई भूप कोई भयो भिखारी। कोई धनवान दरिद्र दुखारी
करमन ही पावे नर देहा। करमन ही योनिन भरमेहा
करमन ही नाना जस करता। करमन ही कर संकट भरता
करमन ही वस पावत ज्ञाना। करमन ही वस सतगुर ध्याना
बँध्यो जीव करमन वश माहीं। क्रोड़ यतन कर छूटे नाहीं
यह संयोग बनें तब भाई। संतों की संगति जब पाई
झूठा है यह सब संसारा। भाई बंधु पुत्र और दारा
है दुनिया का ऐसा लेखा। सोते जैसे सुपना देखा
सुपने में तैं माया पाई। जागा जब कुछ हाथ न आई
भरम रहा इस धोखे माहीं। जीवन मरन का कुछ भी नाहीं
तेरा है नहीं कोई ठिकाना। झूठे को सच्चा कर माना

इतना भी तूँ जानैं नाहीं । क्या लाया था क्या ले जाहीं
आया था कुछ लाहे कारण । उल्टा लगा पौ बचे हारण
बाल अवस्था खेल गँवाई । तरुण भयो नारी सँगलाई

दोहा—वृद्ध अवस्था गुण रहत, शीतल भयो सब अंग ।
ना कुछ दीखे ना सुनें, विगड़ गयो सब रंग ॥
हाहा कर रोवत महा, शीश उड़ावत रेत ।
अब पछिताये क्या होत है, चिड़िया चुग गई खेत॥

चौपाई ।

जो हो तुम्हैं ज्ञान की आशा । सुनों चित्त दे इक इतिहासा
नृपहिं विवेक भयो इक भारी । शील स्वभाव संत हितकारी
लाज क्षमा संतोष अरु समता । दया ज्ञान बड़े बलवंता
हितकारी भूपति कवि कहहीं । बल अनुमान सदा हित करहीं
संयम नियम तीर्थ अस्नाना । योग यज्ञ व्रत दान निधाना
यह सब कटक भयो अतिभारी । सदा राज की रहै रखवारी
राजा परम भगत पद पाई । नित प्रति प्रभु सेवा अधिकाई
परजा वाकी बहुत सुखारी । धर्म काज की सब अधिकारी
दूजो भयो मोह एक राजा । उसके अनीत भये सब काजा
काम क्रोध मत्सर पाखंडा । हिंसा लोभ महा परचंडा
यह सब सैनापति हैं भाई । राजा मोह की करें सहाई
चोरी जारी जुआ ठगाई । ऐसा कटक भयो अधिकाई

करें अधर्म सभी अब भारी । हर लावें पर धन पर नारी
परजा दुखी भई तब सारी । राजा विवेक पै जाय पुकारी
एक दुष्ट ने आन सतायो । हमने बहुत कष्ट है पायो
तुम हो बड़े धर्म के राजा । उपाय करो तुम हमरे काजा
तब परजा को देख दुखारी । राजा बोले नीति विचारी
पहिले वाको मैं समझाऊँ । नहिं माने तो राड़ मचाऊँ
फिर राजा दिये विप्र पठाई । इतने अक्षर दिये लिखाई
हम जाने थे तुम हो ज्ञानी । अनुचित काज किये मनमानी
परजा को तुम बहु दुख दीना । इनको अनाथ जान तुम लीना
जो तुम अपनी चहो भलाई । चले जाओ तुम प्राण बचाई

दोहा—नातो सन्मुख आयके, युद्ध करौ मम साथ ।
हार जीत सब होत है, परमेश्वर के साथ ॥

चौपाई ।

जबहिं मोह ने यह सुधि पाई । सैना लै सँग करी चढ़ाई
बहु जुझाउ के बाजे बाजे । सूर वीर आनँद से गाजे
रण भूमी जब पहुँचा आई । काम ने अपनी कला दिखाई
बसंत ऋतु तब रची सुहाई । बेल विटप सब दिये फुलाई
शीतल मंद सुगंध भई भारी । काम कृशान बढ़ावन हारी
पुष्प बाण जब छाँड़न लागा । मनसुख सबके मनमें जागा
हाहा शब्द भयो अति भारी । कामातुर भये सब नर नारी
वृक्षों से मधु टपकन लागा । धैर्य धर्म सबका तब भागा

योगी यती साधु ब्रह्मचारी। भये काम-वश समय विसारी
कोई न माने मात पिताहूँ। कोई न जाने धर्म निवाहूँ
लाज ने आय जव रोका आगा। तव तो काम प्राण ले भागा
है निलज्ज लाज नहिं तोरे। अवतूँ भागा सन्मुख मोरे
तू अनंग रखता नहिं कागा। क्योंकर चले अव तेरी माया
सन्मुख सवके लाज जव आई। लज्जा मान शिर लिया झुकाई
उतर गया सवका मद भारी। तप्त काम की बुझ गई सारी
जितने काम के रहे दुखारी। सव शीतल हो भये सुखारी
पुनि लज्जा सवके मन आई। या विधि सवको दिया सुझाई
कांम वड़ा है दुष्ट अन्याई। एक महूरत का सुखदाई
अंत समय यह लावे ख्वारी। सवहिं कलंक लगावे भारी
यही गर्भ खंडन करवावे। यही नारि से पति मरवावे
यही करावे जग में हाँसी। यही दिलावे सवको फाँसी
यहही सवका वल हर लेहैं। अपयश का भाजन कर देहैं
यातें धर्म औ धन घट जाई। यातें ज्ञान ध्यान छुट जाई

दोहा—निश्चय कर मानों यही, सव पापों का मूल।
तुमको करके वावला, सरमें डाले धूल॥
विजय भई अव लाज की, भांग गयो है काम।
आनँद मनाओ तुम सभी, सुख से लो निज धाम॥

चौपाई।

सुनों लोभ की हुई चढ़ाई। प्रभुता इसकी देखो भाई
जभी लोभ का भयो सहारा। सवके मन भयो लालच भारा

कोई पंडित पुस्तक लै भारा । घर घर फिरै लोभ का मारा
कहै सभी को बात बनाई । कथा हमारी देहु बिठाई
कोइ २ ज्योतिषी बनकर आवा । जन्मपत्र के ग्रह बतलावा
कोई कहैं हम वैद्य हैं भारी । औषधि पास रखें हैं सारी
जो कोई दवा हमारी खावे । उसके निकट रोग नहिं आवे
कोई कहैं हम सिवरी स्यानें । प्रेत पिशाच मंत्र हम जानें
सेठ साहों की भई यह रीती । लोभ व्योहार करें अनरीती
राजा दंड विडंडत लैहैं । परजा को सुख कबहुँ न देहैं
कोई कहैं हम मंत्री हैं भारी । राजनीति के हम अधिकारी
जो कोई भेंट हमें कर दैहैं । ताके कष्ट मिटा हम दैहैं
सबही की भई लोभ कमाई । धर्म अधर्म को अंतर नाइ
जो कुछ धर्म दान करै कोई । लोक दिखावा ही है सोई
या विधि भ्रष्ट भयो संसारा । फैल गयो है लोभ अपारा
तब संतोष मुनि भेष बनाई । सन्मुख भयो लोभ के जाई
साधु मूर्ति तब दई दिखाई । बल अरु तेज रूप अधिकाई
तब तो लोभ देख घबरावा । थर थर काँपै बोल न आवा
करतब अपना दिया भुलाई । भग जानें की करत उपाई
राजा मोह जब खबर अस पाई । रंग भूमि तब पहुँचा आई
हाथ जोड़कर बोला राजा । कहा मुनि जी आये केहिकाजा
तब संतोष कहै यह बाता । हम नहीं राखें अधर्म से नाता
जहाँ रहैं तहाँ लोभ न जाई । मोह से हमें प्रयोजन नाइ
हम संतोषी हैं ब्रह्मचारी । नृप विवेक के हैं रखवारी

तुमको राजा मद है भारी । करी नहिं कछु कान हमारी
तुमको भसम करूँ छन माहीं । नृप की आज्ञा पर मोय नाहीं
तभी मोह ने हार अति पाई । लोभ संग ले चलो पराई
फिर संतोष सबके मन आवा । या विधि सबको दिया समुझावा
पापी बड़ा लोभ को जानों । कहा हमारा सत्य कर मानों
यही तुमको चोरी सिखलावा । याही तुमको जुआ खिलावा
येही तुम से ठगी करावे । यह तुमको बहु नाच नचावे
तुम संतोष राखो मन माहीं । फिर तो लोभ व्यापे ही नाहीं

दोहा—किये लोभ कुछ ना मिले, यह कर मानों ठीक ।
विन माँगे मोती मिले, अरु माँगे मिले न भीक ॥

चौपाई ।

काम लोभ दोउ गये हारी । भई क्रोध के रिस उर भारी
दुर वचनों के शस्त्र नवीने । उसने सभी धारण कर लीने
कोप भरा वह काँपन लागा । रक्त नेत्र कर झाँकन लागा
रण भूमि जा भयो वह ठाढ़ा । रिस तब बहु वाके मन बाढ़ा
घोर शब्द वह करने लागा । रन माहिं वह नाचन लागा
कहाँ गये वह दोउ विचारे । लाज संतोष जिनके बल भारे
काम लोभ तो जीत लिये हैं । हमें जीत तब राज न ऐहैं
मोह राजा की फिरी दुहाई । सत्य कहूँ मैं राम दुहाई
याहि प्रकार पुकारत धावा । सन्मुख वाके कोउ न आवा
फिर माया रच करी उपाई । पैठा सबके मन में जाई

तबहिं क्रोध घर घर बढ़ गयो । कौतुक भारी क्रोध का भयो
घर घर में जब मची लड़ाई । व्याकुल हो गये लोग लुगाई
अति पछिताय मींज सब हाथा । वेग सहाय करौ श्री नाथा
क्षमा तेज रूप अति भारा । सबका आकर लियो सहारा
तभी क्रोध के सन्मुख आई । या विध वाको दिया भरमाई
हम ईश्वर की राखैं भक्ती । तातें हम पाई बहु शक्ती
निठुर वचन जो चित में धरहैं । रौरव नर्क माहिं तब परहैं
हम से कभू जीत नहिं पाओ । भाग जाओ तुम प्राण बचाओ
जो राखै नित क्रोध अधिकाई । वाके तन में अग्नि हो जाई
शनै शनै बल छीजै सारा । कोई उसको फिर नहीं उबारा
वह काहू ते जीति न पावे । बिन मारे आपही मर जावे

दोहा—मीठे मीठे वचन कह, जीत लिया सब क्रोध ।
निर्भय सबको कर दिया, कुछ नहिं रहा विरोध ॥

चौपाई ।

अब पाखंड की सुनो तुम बाता । जो अनरीति करै दिन राता
जब पाखंड ने करी चढ़ाई । सबके चित को दिया भरमाई
रखे नहीं कुछ ज्ञान से काजा । प्रगट भयो पाखंड समाजा
करें विवाद बहुत सा आई । अपनी अपनी कथा सुनाई
त्याग दिया सब कुल व्योहारा । धर्म वही जो मन ने धारा
कोई तीर्थों की करे बुराई । साधु विप्र से रखें लड़ाई
या विधि कहैं सब बात बनाई । इनमें कौन बड़ाई पाई

जो इनकी हम करिहैं पूजा। हमरा भाव बन गया दूजा
मरे उपरान्त आवे नहिं कोई। इनके लिये श्राध क्यों होई
कोई कहैं हम जानत नाई। पित्र पूजा केहि कारण भाई
कोई कहै सब पशू समाना। गऊ पूजा है वृथा हम जाना
यही प्रकार बहु पंथ बनाई। करहिं धर्म निंदा अधिकाई
करत फिरैं आपस में रगड़ा। अपने अपने मत का झगड़ा
पाखंड विवाद कछु कहा न जाई। पृथक् पृथक् दिये पंथ चलाई
वेद शास्त्र का रहा न विचारा। या विध भ्रष्ट भयो संसारा
नृप विवेक ने सुधि अस पाई। ज्ञान बुलाय कहा समुझाई
तुम अब जाय कुछ करो उपाय। जा विध यह पाखंड मिटजाय
ज्ञान बड़े योधा जग माहीं। जिन समान दूजा कोउ नाहीं
नृप विवेक के हैं हितकारी। रक्षक सदा धर्म के भारी
रणभूमी कही जाय यह बाता। सुनो पाखंड क्रोध कर भ्राता
वृथा बात माने नहिं कोई। परचे परतीत जान सब कोई
जो कुछ धर्म सनातन होई। निश्चय कर मानें हम सोई
सुने नहीं पाखंड कहानी। हमने बात धर्म की जानी
अपनी कथा तुम देहु सुनाई। फिर यह हमको देहु बताई
तुमरी पोथी कहाते आई। केकी रची और कौन बनाई
जितनी पोथी हमें दिखाई। सो सब हैंगी मनुष बनाई
बुधि अनुमान कहै सब कोई। इनका प्रमाण करै नहिं कोई
प्रगट जिससे शास्त्र पुराना। धर्म अधर्म का करै बखाना
वेद ऋचा जो हैगी भाई। ईश्वर वचन सो जानो ताई

परम धर्म यह हैगा जोई। वेद प्रमाण दूजा नहिं कोई
तुम या विध निश्चय कर जानो। और धर्म सच्चो नहिं मानो

दोहा—यों पाखंड समुझाय के, जीत लियो छिनमाँहि।
सदा जीत है ज्ञान की, यामें संशय नाहिं॥

चौपाई।

अब मत्सर की हुई चढ़ाई। सबको या विध दियो बहकाई
तुम सब झूँठी बात बनाई। चुगली सबकी करो हो जाई
जातें मन में परे खटाई। विरोध ईर्षा अति बढ़ जाई
यह मत्सर ने किया उपाई। सब के मन यह बात समाई
झूँठी बात को लेंइ उठाई। पीछे सब की करे बुराई
विर्था दोष लगावें भाई। जिसमें कुछ भी नहीं सचाई
मिथ्या कहत नहीं सकुचाहें। अपना मनोरथ करना चाहें
बड़े कुलीन कहावें जोई। चुगली ने सब दिये भिगोई
घर घर में यह फैला झगड़ा। मत्सर का इक हो गया रगड़ा
सबके मन भयो संशय भारी। व्याकुल होगये सब नर नारी
समता सबके सन्मुख आई। इस प्रकार सब दिये समुझाई
यह सब झूँठी बात तुम जानों। कहा हमारा सच्चा कर मानों
झूँठी बात सच्ची नहिं होई। बुद्धिमान मानें नहिं कोई
उनकी बात रोष मत करहो। समता अपने मन में धरहो
उनके कुछ भी हाथ न आया। वृथा अपना जन्म गँवाया
खोंटे वचन सबके यह सैहैं। अपना मुँह काला कर लैहैं

दोहा—अब मत्सर घर घर फिरे, कोई न सुनैहै बैन।

हार मान उल्टा फिरो, मन में रहा न चैन ॥

चौपाई ।

अब हिंसा की हुई तयारी । बाँधे शस्त्र बहुत भयकारी
रणभूमी जब आय पुकारी । हाहा शब्द भयो तब भारी
हत्या जीव करें दिन राती । साथ लिये अपने बहु जाती
भील पादरी वधिक अनेका । निर्दइ भारी एक तें एका
राजा हैं सब भये शिकारी । जीव मारन की करैं तयारी
पक्षी पशुहिं मार घर लावें । मांस खाय कर सुख बहु पावें
मिल दस पाँच फिर करें बड़ाई । भोजन अमुक बड़ा बलदाई
अपने मनमें ग्लानि नहिं लावें । तामें स्वाद अधिक बतलावें
हिंसा सब के मन में व्यापी । धर्म त्याग हो गये सब पापी
गऊ विध्वंस जब करने लागे । बहुतक पाप बटोरन लागे
दया बड़ी ईश्वर की प्यारी । सबके सन्मुख जाय पुकारी
तुम या विध हत्या क्यों करहो । अपने शिर पातक क्यों धरहो
भोजन की बहु वस्तु हैं नीकी । मीठी खट्टी लोंनी फीकी
दही दूध घी और मलाई । मेवा बहु पकवान मिठाई
कन्द मूल और फल बहुताई । एक ते एक स्वाद अधिकाई
यह सब भोजन करहु सदाई । इनमें कुछ पातक है नाई
अपने मन में करो विचारा । जीव हत्या का पाप है भारा
जहँ तक तुम्हरी पार बसाई । रक्षा करो जीव चित लाई
सुन रक्खो अपने मन माँहीं । यामें कछू झूँठ है नाहीं

दोहा—जो गल काटे और का, अपना रहै कटाय ।

साईं के दरबार में, बदला कहीं न जाय ॥

चौपाई ।

या विध सेनापति गये हारी । कटक युद्ध फिर भयो अतिभारी
इधरहिं मोह कटकं चढ़ आयो । उधर विवेक कटक ल धायो
एकहिं बार मिले दोउ आनी । अधिक युद्ध नहिं जाय बखानी
कोइ कोइ शस्त्रहिं दई चलाई । कोई कोई तीर बरसावैं आई
कोई आगे कोई पीछे भागा । मारहो धरहो पुकारन लागा
कोई कुश्ती कर देइ गिराई । कोई मुक्के से करैं लड़ाई
जब या विधि कर मची लड़ाई । राजा मोह की हार तब आई
कोई घायल कोई मारा जाई । बहुतक भागे जान बचाई
नृप विवेक जीति जब पाई । मोह सेन संग चलो पराई
जय जय शब्द भयो अतिभारी । खुशी मनावें सब नर नारी
परजा को आनँद भयो भारी । जितने दुख थे मिट गये सारी
ईश्वर की जब हुई सहाई । नृप विवेक ने खुशी मनाई
साधु विप्र सब लिये बुलाई । बहु प्रकार व्यंजन करवाई
सबको दान बहुत सा दीन्हा । आदर मान सभों का कीन्हा
आनँद पाय सब देहिं अशीसा । चिरंजीव तुम रहो महीसा
जब लग जमुन गंग जल बहहीं । तुमरो राज रहै जग महँहीं

दोहा—मोह बखेड़ा मेट के, राजा कियो उपाय ।
नशे सबहिं अतिशय बुरे, परजा देहु बचाय ॥

चौपाई ।

सैनापति सबकर इक ठौरी । प्रजा लोग सब लिये बटोरी

सभा मध्य आया जब राजा। या विधि कहा धर्म के काजा
सुनों एक बात अब मोरी। देहुँ सुनाय नशे की खोरी
मदिरा चरस भंग और गाँजा। करैं पान जो सवेरे साँझा
अफ़ीम पोस्त धतूरा भाई। यह सब तुमको हैं दुखदाई
जितने नशे हैं जग के माहीं। सब मध्यम उत्तम कोउ नाहीं
जो तुम में है ज्ञान सहारा। इन सब ते तुम करेहु किनारा
यह सबको पागल कर देहै। ज्ञान ध्यान सबका खो देहै
कपड़े फाड़ पड़े बिच कीचा। सूझ पड़ नहिं ऊँच अरु नीचा
घरका धन सब देह गँवाई। नशा न हो तब अति पछिताई
जब पैसा उस पास न आवे। घर घर माँगन की ठहरावे
जबहिं तरंग नशा चढ़ जाई। मानों डसा सर्प ने आई
जिनको नशा तुम देहो खिलाई। रक्तबीज सब देई जलाई
यह दोउ वस्तु शरीर में नीका। इनके बिगड़े कहो क्या ठीका
इससे बहुत व्याधि हो जाई। पीला रंग सबका पड़ जाई
यह शरीर को दुर्बल करिहै। जोवन सबका फीका करिहै
अपनी जो तुम चहौ भलाई। नेड़े इनके आओ मत भाई
इतना कहा हमारा मानो। सबसे बुरा नशे को जानो
दोहा—राम कृपा पूरण भयो, यह इतिहास अनूप।
आपन भला जो चाहहु, भजहु राम सुर भूप॥

चौपाई।

हे प्रभु तुम हो दीन दयाला। सदा भक्त को करहु निहाला
धुरू नाम तुमरो जब लीन्हा। पदवी अटल ताहि तुम दीन्हा

राम नाम प्रह्लाद पुकारो । खंभ फाड़ प्रभु वाहि उवारो
जब गज ने हरि नाम उचारो । वाको ग्राह से दियो उवारो
अजामील पापी अति भारा । सुत नारायण मरत पुकारा
अपने पारख दिये पठाई । जम दूतों से लिया बचाई
चीर खिंचन की हुई तयारी । कृष्ण कृष्ण द्रौपदी पुकारी
वाको चीर तुम दियो बढ़ाई । भक्त हेतु कीन्ही प्रभुताई
नरसी ने जब टेर लगाई । साँवलसाह बने तुम आई
हुण्डी वाकी दई चुकाई । भात वाको फिर दियो भराई
सुआ पढ़ावत गणिका तारी । और उधारे पापी अति भारी
खेत घना बिन बीज उगायो । नामानंद की छान छवायो
नाम लेत तुम करी सहाई । नामप्रताप कुछ कहा न जाई

दोहा—नाम वड़ाई क्या कहूँ, जाको वार न पार ।
क्रोड़हो पापी निसतरै, क्रोड़हो का निस्तार ॥

चौपाई ।

है तुम्हरो इक दास विरक्ता । सब कारज में अति आसक्ता
जानो नहीं कुछ भजन उपाई । विर्था अपनी उमर गवाई
भूल रहा इस माया माहीं । पाप बहुत कीन्हें जग माहीं
अब मैं शरण तुम्हारी आयो । अपने मन निश्चय करवायो
तुमहो सबके करता भरता । सब पातक के तुम हो हरता
जो कोई शरण तुम्हारी आवे । सब पातक उसका मिट जावे
जो कोई भक्त तुम्हारो होई । पदवी मुक्ति पावे है सोई
अब प्रभु कृपा करहु यह भाँती । तुम्हरो भजन करूँ दिनराती

जामें होय परम कल्याना। सोई करहु अब कृपानिधाना

दोहा—मैं अपराधी हीन मति, पड़ो मोह के जाल।
मम कृत दोष न मानिये, तुम हो दीनदयाल॥

चौपाई।

मतिअनुसार यह कथा बखानी। नाम रखा है ज्ञान कहानी
अवसर नहीं अधिक मैं पावा। तातें मैं संक्षेपहि गावा
एक भरोस मोरे मन रहा। लीला प्रभु की कछु मैं कहा
जो पंडित वक्ता जग माहीं। सबसे विनय करूँ सर नाहीं
जो कुछ भूल चूक या माहीं। करहो कृपा सुधारो ताहीं
फेर प्रसन्न होय देहु वरदाना। साधु समाज सकल सन्माना
जो कोई पढ़े इसे चितलाई। वाको ज्ञान प्राप्त हो जाई

दोहा—सम्वत विक्रमनयँन ॠतु, अंकँ चन्द्रं पहिचान।
भाद्र द्वादशी कृष्णदल, वार शनिश्चर मान॥
पूरण होगई यह कथा, ज्ञान कहानी नाम।
मंदमती जानों न कछु, कृपा करी श्रीराम॥

भजन।

टेक—जतन करो मन वेग चलन की॥ छाँड़ भवन सुधलो हर वन की॥ जतन०॥ जगत साज सब दुख की झाड़ी। आस न कर यहाँ नीक फलनकी॥ जतन०॥ परम पदारथ जो तूँ चाहै। करले जतन मन इन्द्री दमन की॥ जतन०॥ मोह जाल जग फँसके प्यारे। क्यों बिसारी सुध अपने मरन की॥ जतन०॥ बैनीप्रसाद छाँड़ सँग विषयन। करो चाह चित हर दरशनकी॥